वार्तालाप नं 612, दिनांक 10.08.2008, बैंगलोर
Disc.CD No. 612, dated 10.08. 2008, at Bangalore

समय: 00.06-01.30

जिज्ञासु:- बाबा, आज की मुरली का पॉइन्ट है- बाबा जिस शरीर में आते हैं उन्हीं की भाषा कार्य में लाते हैं।

बाबा:- कार्य में लाते नहीं, बाबा बाप के रुप में जिस तन में आते हैं उन्हीं की भाषा बोलते हैं। सिन्धी या अंग्रेजी में नहीं बोलते हैं। हाँ जी।

जिज्ञासु:- ये बात बी. के. लोग से पूछने से क्या कहेंगे?

बाबा:- वो भी ये कहेंगे कि हिन्दी में ही तो बोली है मुरली। (किसी ने कुछ।) हिन्दी में नहीं बोली है? हिन्दी में ही तो मुरली बोली है। और वो जो जवाब देते थे लेटर्स का, ब्रह्मा बाबा, बच्चों के लेटर्स आते थे, उन लेटर्स का जो जवाब देते थे वो सिन्धी में देते थे या हिन्दी में देते थे? सिन्धी भाषा में देते थे। इससे क्या साबित होता है?

जिज्ञासु:- उनका मदरटंग सिन्धी था।

बाबा:- उनका मदरटंग ही सिन्धी था। वो हिन्दी जानते ही नहीं थे इतनी कि लिख सकें। हाँ।

जिज्ञासु:- इसलिए ये बात से साबित कर सकते हैं न?

बाबा:- बाप की पहचान इसमें समाई हुई है।

Time: 00.06-01.30
Student: Baba, today's murli's point is, the one in whom Baba comes He uses only his language.
Baba: He does not use it; Baba speaks only the language of the body in which He comes in the form of a father. He does not speak Sindhi or English. Yes.
Student: If we ask the Bks, what will they say [about this]?
Baba: They will also say that the murli has been spoken just in Hindi. (Someone said something.) Did he not speak in Hindi? He narrated the murli just in Hindi. And the replies for letters that he used to give; Brahma Baba used to receive letters from the children; were the replies that he used to give for those letters written in Sindhi or in Hindi? He used to give it in Sindhi language. What does it prove?
Student: His mothertongue is Sindhi.
Baba: His mothertongue itself was Sindhi. He wasn't so good at Hindi that he could write it.
Student: This is why through this point it can be proved, can't it?
Baba: It contains the recognition of the Father.

समय: 01.48-03.24

जिज्ञासु:- बाबा, कुमारिका दादी ने शरीर छोड़ने के बाद प्रकृति से हाथ मिलाया कहते हैं।

बाबा:- हाँ, प्रकृति से हाथ मिलाय लिया, ऐसा संदेश में आया। हाँ, जी।

जिज्ञासु:- पहले अव्यक्त वाणी में आया हम ईश्वरीय विश्वविद्यालय में बाबा को प्रत्यक्ष करेंगे। वो दादी कहती है करके आया ना? तो फिर इन दोनों पॉइन्ट का फर्क क्या है?

बाबा:- दोनों पॉइन्ट फर्क क्यों होगा? ईश्वरीय विश्वविद्यालय तो ये भी है।

जिज्ञासु:- कुमारिका दादी माना माया जो प्रकृति से हाथ मिलाई। तो हाथ मिलाने से बाबा कहते हैं वो दोनों मिलकरके अभी जो एडवांस के बच्चे हैं उनको हिलायेंगे।

बाबा:- हाँ, हिलायेंगे।

Time: 01.48-03.24
Student: Baba it is said that after Kumarika Dadi left her body she joined hands with nature.
Baba: Yes, it has been mentioned in the message that she has joined hands with nature. Yes.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: It was mentioned in the first avyakt vani [narrated after she left her body] that she will reveal Baba in the Ishwariya Vishwavidyalaya. It was mentioned that Dadi said this, wasn't it? So, what is the difference between both these points?
Baba: Why will there be a difference between both the points? This is also an Ishwariya Vishwavidyalay (University of God).
Student: Kumarika Dadi means Maya, who has joined hands with nature. So, when they joined hands, then Baba said that both of them will together shake the children in the advance party.
Baba: Yes, they will shake.

जिज्ञासु:- तो वो अपोजिट हो गया।

बाबा:- अपोजिट क्यों हो गया? जो कच्चे-2 होंगे वो हिलेंगे या पक्के-2 होंगे सो हिलेंगे? जो कच्चे होंगे सो हिल जायेंगे, अनिश्चय बुद्धि बन जायेंगें। बाकि जो पक्के होंगे उनका फाउन्डेशन नई दुनियां का पड़ जावेगा। तो नई दुनिया की प्रत्यक्षता होगी या नहीं होगी? होगी। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) हाँ जी। हर बात में राज़ समाया हुआ है। संगमयुग में जो भी प्रैक्टिकल ड्रामा चल रहा है वो सब कल्याणकारी है। कुछ भी अकल्याणकारी नहीं है।

Student: So, that is opposite [to what was said in the avyakt vani].
Baba: How is that *opposite*? Will the weak ones shake or will those who are firm shake? Those who are weak will shake; they will lose faith. As regards those who are strong will lay the *foundation* for the new world. Will the revelation of the new world take place or not? It will take place. (Student said something.) Yes. There is a secret in every topic. Whatever *drama* that is going on in practice the Confluence Age is beneficial. Nothing is harmful.

समय: 03.25-04.39

जिज्ञासु:- मुरली कां पॉइन्ट है रुमाल खोया तो सब कुछ खोया।

बाबा:- क्या खोया?

जिज्ञासु:- रूमाल।

बाबा:- हाँ, रुमाल भी अगर खो गया तो कभी अपने आपको भी खो देंगे। हाँ, तो पूछना क्या है?

जिज्ञासु:- इसका बेहद का अर्थ क्या है?

बाबा:- इसका बेहद का अर्थ है एक तो होता है हद का रुमाल जिससे चेहरा, मोहरा, हाथ वैगरा पोंछते हैं। एक है बेहद का रुह का माल। क्या? बेहद का रुह कौन सी है? आत्मा। और आत्मा का माल कौन सा है? पवित्र शरीर। अगर वो खो दिया तो क्या होगा? सब कुछ खो जावेगा। आत्मा का अपना अस्तित्व ही खो जाएगा।

Time: 03.25-04.39
Student: There is a murli point: if you lose a handkerchief (*rumaal*), you will lose everything.
Baba: What do you lose?
Student: Handkerchief.
Baba: Yes, even if you lose a handkerchief, then you will even lose yourself some day. Yes, so what do you want to ask?
Student: What is its unlimited meaning?
Baba: Its unlimited meaning is that one is a limited handkerchief (*rumaal*) which is used to wipe the face, hands, etc. and the other is an unlimited *maal* (property) of *ruuh* (soul). What? Which is the unlimited *ruuh?* The soul. And what is the property of the soul? A pure body. What will happen if you lose it? You will lose everything. The existence of the soul itself will be lost.

समय: 04.41-09.04

जिज्ञासु:- बाबा, शंकर द्वारा इतना ज्ञान निकलता है तो भक्तिमार्ग में हमेशा तपस्या करते हुए क्यों दिखाते हैं?

बाबा:- क्या दिखाते हैं? (किसी ने कहा- तपस्या करते हुए।) अगर तपस्या ही नहीं करेंगे तो आत्मा तपेगी? जब आत्मा कुन्दन ही नहीं बनेगी, तपेगी ही नहीं तो ज्ञान कैसे निकलेगा? तो

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

ज्यादा योगी होगा सो बाप के कार्य में ज्ञान में ज्यादा सहयोगी होगा या जो योगी नहीं होगा भोगी होगा वो ज्ञान में ज्यादा सहयोगी बनेगा? ज्ञान माने बाप की पहचान। बाप की पहचान देने में वो ही सबसे जास्ती सहयोगी होगा जो योगी सो सहयोगी। इसलिये शंकर को या ब्रह्मा के पहले पुत्र को योगीश्वर कहा जाता है। योगियों का ईश्वर। अगर सागर के जल में गर्मी ही नहीं आवेगी तो सागर का जल भाप बन करके उपर उड़ेगा क्या? नहीं उड़ेगा। और भाप बनकर अगर उँची स्टेज में नहीं जावेगा तो ज्ञान की बरसात होगी क्या? नहीं होगी। ऐसे ही वो सागर बाप का बच्चा है। कौन? शंकर। ज्ञान सागर का बच्चा है।

Time: 04.41-09.04
Student: Baba, if so much knowledge emerges from Shankar, then why is he always shown doing *tapasyaa*[1] in the path of *bhakti*?
Baba: What do they show? (Someone said: Sitting in *tapasyaa*.) If he does not do *tapasyaa* at all, then will the soul heat up? When the soul does not become *kundan* (pure gold) at all, if it does not heat up at all, then how will the knowledge emerge? Will the one who is more *yogi* become more helpful in the Father's task, in knowledge or will the one who is not *yogi* but *bhogi* (pleasure seeker) become more helpful in knowledge? Knowledge means the recognition of the Father. Only the one who is more *yogi* will be the most helpful in giving the introduction of the Father [as per the slogan] *yogi so sahayogi* (the one who is yogi is helpful). This is why Shankar or the first son of Brahma is called Yogishwar. Lord of the *yogis*. If the water of the ocean does not heat up, then will the water of the ocean evaporate and rise high? It will not rise. And if it does not evaporate and go to a high *stage*, will the rain of knowledge take place? It will not. Similarly, he is the child of the Ocean, the Father. Who? Shankar. He is the child of the Ocean of Knowledge.

तो योग की अग्नि जरुर चाहिए। जितनी अग्नि प्रज्जवलित होगी उतना वाष्प बनेगा। भाप बनकर आत्मा ऊँची स्टेज में जोवगी उतना ही ज्ञान जल बरसावेगा। इसलिये शास्त्रों में दिखाया है विचार सागर मंथन का नाम बहुत बाला है। सागर मंथन हुआ। जब कोई मटकी में जमाया हुआ दूध बिलोया जाता है तो मटकी के अंदर धमाचौकड़ी मचती है या नहीं मचती है? होती है। ऐसे ही जब सागर मंथन हुआ तो बड़े-बड़े एटम बम्ब सागर के अन्दर और पृथ्वी के अन्दर फटेंगे कि नहीं? फटेंगे। तो सारी पृथ्वी पर भूकम्प आवेंगे या नहीं आवेंगे? भूकम्प आवेंगे। इतने बड़े-बड़े भूकम्प आवेंगे तो समन्दर का जल क्या होगा? बर्फ बन जायेगा? गरम हो जायेगा। खौल जावेगा। सारा समन्दर आलोड़ित हो जावेगा। और ज्ञान का मक्खन, 84 जन्मों की कथा कहानी सबके दिल में उतरने लगेगी। अपने-अपने 84 जन्मों का साक्षात्कार बुद्धियोग से होने लगेगा। सार-सार उपर आ जावेगा।

So, the fire of yoga is definitely required. The more the fire is ignited, the more it (water of knowledge) will evaporate. The soul will turn into vapour and rise to a high *stage*. It will bring the rain of knowledge to the same extent. This is why it has been shown in the scriptures that the name of the churning the ocean of thoughts is very famous. The ocean was churned; when the milk set as curd in a pot is churned, does turmoil take place in the pot or not? It takes place. Similarly, when the churning of the ocean takes place, then will big *atom bombs* explode within the ocean and on earth or not? They will explode. So, will there be earthquakes on the entire earth or not? Earthquakes will occur. When such big earthquakes occur, what will happen to the water of the ocean? Will it become ice? It will heat up. It will boil. The entire ocean will be stirred up. And the cream of knowledge, the story of the 84 births will start comming in the heart of everyone. They will start having the visions of their 84 births through the intellect. The essence will come to the surface.

[1] Intense meditation

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय: 09.26-13.59

जिज्ञासु:- बाबा, सारी दुनिया के मालिक आदि से अन्त तक कोई बनता है क्या?

बाबा:- सारी दुनिया का मालिक बनने के लिये प्रयत्न करने वाले कोई हुये या नहीं हुये? आदि से अन्त तक सारी दुनिया के उपर कन्ट्रोल करने के लिए कोई ने आदि से अंत तक इस ड्रामा में प्रयास किया या नहीं किया? किया तो बहुतों ने लेकिन सारी दुनिया का मालिक कोई बन नहीं सका। उन्होंने क्या गलती की? बाहुबल का उपयोग किया। और भगवान बाप योगबल से विश्व की बादशाही देते हैं। तो जो पढ़ाई योग बल की पढ़ाते हैं वो पढ़ने वाले नंबरवार हैं या एक जैसे हैं? नंबरवार हैं। तो कोई बच्चा ऐसा भी होगा न कि जो सौ परसेन्ट आता हो योग बल की पढ़ाई में। कोई निकलता है या नहीं निकलता है? जिसने प्रश्न पूछा वो बताये।

Time: 09.26-13.59

Student: Baba, does anyone become the master of the entire world from the beginning to the end?

Baba: Were there any people who made efforts to become the master of the entire world or not? Did anyone make efforts to *control* the entire world in this *drama* from the beginning to the end? Many made efforts, but nobody could become the master of the entire world. What mistake did they commit? They used physical power (*baahubal*). And God, the Father gives the emperorship of the world through the power of yoga (*yogbal*). So, the knowledge of the power of yoga that He teaches, are the students [who study it] numberwise[2] or alike? They are numberwise. So, there must also be a child who achieves hundred *percent* [marks] in the knowledge of the power of yoga. Does anyone [like this] emerge or not? Let the one who has asked the question reply.

जिज्ञासु:- वो आदि से अन्त तक बनता है क्या?

बाबा:- अरे! आदि से अन्त तक विश्व की बादशाही एक के ही हाथ में ही रहेगी? फिर दुनिया में नंबरवार कैसे बनेंगे? अगर एक के हाथ में ही विश्व की बादशाही रही तो एक ही एक हो जावेगा या नम्बरवार होंगे? नम्बरवार तो होंगे ही नहीं। ऐसे नहीं कि सतयुग में एक का ही राज्य रहता है। ब्रह्मा सरस्वती वाली आत्मायें जब सतयुग में पहले जन्म में राधा-कृष्ण बन करके लक्ष्मी-नारायण बनेंगी और शरीर छोड़ेंगी तो वो भी नीचे उतरते जावेंगे। उनको जन्म देने वाले भी नीचे उतरते जाते हैं। सदा एक सा समय किसी का सुना और नहीं देखा है। क्या? हाँ, पाँच हजार वर्ष के ड्रामा में ये हो सकता है कि कोई आत्मा ऐसी भी हो जो सबसे जास्ती सुख भोगने वाली हो। तो वो साबित हो जाती है। सबसे जास्ती जन्म-जन्मान्तर की योगबल की विश्व की बादशाही या बाहुबल की विश्व की बादशाही भोगने वाली हो? योग बल की। ये हो सकता है। बाकि ऐसे नहीं हो सकता कि 84 जन्म में कोई एक ही विश्व का बादशाह बना रहे। अगर एक ही बना रहे तो क्या होगा? फिर अंतिम जन्म में वो एक विश्व की बादशाही पाने के लिये प्रयास करेगा? उसको तो मिली हुई है। इसलिये ड्रामा नहीं है। ड्रामा में नूंध ही नहीं है कि सदा काल एक जैसा समय किसी का बना रहे।

Student: Does he become [the master] from the beginning to the end?

Baba: *Arey!* Will the emperorship of the world remain in the hands of only one person from the beginning to the end? Then how will the people in the world be number wise (one after the other)? If the emperorship of the world remains in the hands of only one person, then will it be one and only one [emperor] or will there be number wise [emperors]? They will not be number wise at all. It is not that there is the rule of only one [soul] in the Golden Age. When the souls of Brahma and Saraswati become Radha Krishna and then Lakshmi Narayan in the first birth of the Golden Age and then leave their bodies, they will also degrade. Those who give birth to them also continue to fall. We have never heard of or seen anyone with all the days alike. What? Yes, it can be possible in the five thousand years *drama* that there may be a soul who experiences happiness the most. So, that [soul] proves to be [the master]. Will he be the one who enjoys the emperorship of the world the most, for many births through the power of yoga or through the

[2] At different levels according to their capacity

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

physical power? [Through] the power of yoga. This can be possible. But it cannot be possible that only one [soul] remains the emperor of the world for 84 births. What will happen if only one [soul] continues to be [the emperor of the world]? Then, will that one [soul] make efforts to obtain the emperorship of the world in the last birth? He has already received it. This is why it is not fixed so in the *drama*. It is not at all fixed in the *drama* that someone has all the days alike [in his life].

कभी सुख और कभी दुख जरुर होना चाहिए। कभी दिन और कभी रात जरुर होना चाहिए। एक भी मनुष्य ऐसा दुनिया में ऐसा नहीं हो सकता जो सारे ड्रामा में 84 चक्र में सुखी ही सुखी रहे। कभी दुखी न हो।

Certainly there should be happiness sometimes and sometimes there should be sorrow. There should definitely be day sometimes and night sometimes. There cannot be even a single human being in world who remains happy and only happy throughout the *drama* in the cycle of 84 [births] and never becomes sorrowful.

समय: 14.01-19.36

जिज्ञासु:- बाबा, एडवांस में रह करके जो भी शरीर छोड़ता है, वो फिर जन्म लेगा क्या? और जो बी.के. में जो भी आत्मायें हैं माना दादी, दीदी, जो शरीर छोड़ते हैं वो जन्म नहीं लेते हैं?

बाबा:- बी. के. में भी शरीर छोड़ते हैं और पी.बी.के. में भी छोड़ते हैं। तो अन्तर क्या है?

जिज्ञासु:- एडवांस में जो शरीर छोड़ता है वो शरीर के साथ लक्ष्मी-नारायण बनेंगे, यह लक्ष्य रखने से उनको शरीर मिलेगा।

बाबा:- अन्त मते सो गते। यहाँ तो उनकी बुद्धि में बैठा दिया गया ना। क्या बैठाया गया? कि सच्ची पढ़ाई कौन सी है? जो पढ़ाई का रिजल्ट इसी शरीर के साथ निकले। और शरीर ही छूट गया फिर प्राप्ति हुई तो क्या फायदा हुआ?

Time: 14.01-19.36
Student: Baba, will anyone who leaves his body while being in the advance [party] be reborn? And the souls among BKs, i.e. *dadis*, *didis* who leave their body are they not reborn?
Baba: Yes. People leave their bodies in the BK as well as the PBK. So, what is the difference?
Student: The one who leaves his body in the advance [party] with the aim that he will become Lakshmi Narayan along with the body will receive a body again.
Baba: As the thoughts in the end, so shall be the fate. Here, it was made to sit in their intellect, wasn't it? What was made to sit? What is the true learning (*parhaai*)? It is the learning where the *result* is achieved through this very body. And if the achievement is made after the body is lost, then what is the use of it?

जिज्ञासु:- वो तो ठीक है, फिर भी बी. के. में जो दादी, दीदी शरीर छोड़ते हैं उनको शरीर नहीं मिलता।

बाबा:- उनको शरीर इसलिये नहीं मिलता कि उनको सिखाने वाला जो बाप है ऊँच ते ऊँच उसको खुद ही शरीर नहीं मिला। तो उनको कहाँ से मिल जावेगा?

जिज्ञासु:- ठीक है बाबा। फिर भी यहाँ जिसका शरीर मिलता है उसको विकारी जन्म लेना पड़ता है?

बाबा:- विकारी जन्म क्यों लेना पड़ता है? विकारी जन्म लेने के बाद उनको पक्का ब्राह्मण जन्म मिलता है या नहीं मिलता है? (जिज्ञासु-मिलता है लेकिन शरीर विकारी मिलता है।) शरीर विकारी मिलता है। विकारी शरीर से ही पुरुषार्थ होगा या निर्विकारी शरीर से पुरुषार्थ होगा? विकारी शरीर से ही पुरुषार्थ होगा। बिना पुरुषार्थ के तो प्राप्ति ही नहीं होगी। प्राप्ति करने के लिये अंतिम जन्म का विकारी शरीर जरुर चाहिए।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: That is allright; however, the *didis*, *dadis* who leave their bodies in BK don't receive a body.
Baba: They do not receive a body because the father, the highest father who taught them did not receive a body himself. So, how will they receive?
Student: That is allright Baba; the one who receives the body here has a vicious birth.
Baba: Why does he have a vicious birth? After having a vicious birth do they have a firm Brahmin birth or not? (Student: They receive but the body is vicious, isn't it.) The body that they receive is vicious. Will the *purushaarth* (spiritual effort) be made only through the vicious body or through the viceless body? The *purushaarth* will be made through the vicious body itself. One cannot achieve anything without making *purushaarth.* The vicious body of the last birth is definitely required to make attainment.

जिज्ञासु:- वो तो ठीक है बाबा, ब्रह्मा हो या कोई भी इन्स्पिरेटिंग पार्टी की आत्मा हो वो पहले ही ये स्थूल शरीर को जीत लेते हैं क्या?
बाबा:- नहीं, जीत लेता हो तो फिर यहीं जन्म ले ले ना निर्विकारी। 36 से पहले ही निर्विकारी जन्म ले-ले न शरीर से। जीत कहां लेता है?
जिज्ञासु:- मतलब ये है जब वो विकारी शरीर नहीं लेते फिर से तो पुरूषार्थ को ...।
बाबा:- वो इस शरीर से, वो शरीर के द्वारा के द्वारा सिद्धि प्राप्त नहीं करेंगे इस दुनिया में।

Student: That is allright Baba; as regards Brahma or any soul of the inspiriting party does he gains victory over physical already before?
Baba: No. Had he gained victory, then he should have a viceless birth here itself, shouldn't he? He should have a vice less body before [20]36 itself. He doesn't gain victory over [it].
Student: I mean he does not have a vicious birth again then his *purushaarth*…
Baba: They will not achieve success through this body in this world.

जिज्ञासु:- शरीर के साथ सिद्धि प्राप्त नहीं करेंगे फिर भी उनको पुरुषार्थ तो सहज हो जाता है न। जब विकारी शरीर नहीं है तो सूक्ष्म शरीर से दूसरों के शरीर में प्रवेश हो करके?
बाबा:- जगंल में मोर नाचा किसने देखा? माना सूक्ष्म शरीर धारण करना श्रेष्ठ हुआ या स्थूल शरीर धारण करना श्रेष्ठ हुआ? (जिज्ञासु:- सूक्ष्म शरीर धारण करना श्रेष्ठ तो नहीं है।) श्रेष्ठ नहीं है न। उसको मानते हैं मुसलमान और क्रिश्चियन, फरिश्तों को मानते हैं, वो देवताओं को, साकार को नहीं मानते हैं और हम हिन्दु? (जिज्ञासु:-मानते हैं।) क्यों मानते हैं? क्योंकि यहीं इसी दुनिया में साकार चोला रहते-रहते हम सिद्धि को प्राप्त करें। ये ऊँची बात है।

Student: They will not achieve success through the body. Even then, their *purushaarth* becomes easier, doesn't it? When they do not have a vicious body at all, then they will enter others' bodies through their subtle body…
Baba: Did anyone see when the peacock danced in the jungle? It means that is it greater to take on a subtle body or is it greater to take on a physical body? (Student: Taking on a subtle body is not great.) It is not great, isn't it? It is the Muslims and the Christians who believe in them; they believe in angels; they do not belive in the deities, the corporeal and what about us Hindus? (Student: We believe.) Why do we believe? It is because we want to achieve success while living in this very world through the corporeal body. This is a greater thing.

जिज्ञासु:- ऊँची बात है फिर भी उनको पुरुषार्थ सहज लग जाता है न।
बाबा:- क्या सहज लग जाता है? उनका जन्म कम हो गया। आलराउण्ड पार्टधारी ही नहीं रहे, आलराउण्ड पार्टधारी ही नहीं रहे तो पूरा एक्सपिरियेन्स्ड आत्मा हुई या नहीं हुई? नहीं हुई। इसलिये उनको बच्चा बनना पड़ेगा, बच्चा बुद्धि। अभी भी कैसे हैं? उनकी आत्मा बच्चा बुद्धि या सालिम सगिर बुद्धि है? बच्चा बुद्धि है। और हम? हम बच्चे सालिम बुद्धि हैं। तो कौन से बाप के बच्चा होना चहिए? बुद्धिमान बाप के बच्चे भी कैसे होना चाहिए? बुद्धिमान बच्चे होना चाहिए। झण्डा ऊँच रहे हमारा।

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Student: It is a greater thing even then, their *purushaarth* is easier, isn't it?
Baba: What is easier? Their number of births was lessened. They are not at all *allround* actors; when they are not at all *allround* actors, then did the soul become completely *experienced* or not? It did not. This is why he will have to become a child, the one with child like intellect; how is he even now? Does his soul have a child like intellect or a mature intellect? He has a child like intellect. And what about us? We children are with matured intellect. So, we should become children of which father? How should the children of the intelligent Father be? They should be intelligent children. Our flag should remain high. ☺

जिज्ञासु:- 69 में जब ब्रह्मा बाबा ने शरीर छोड़ा तो उन्होंने पंच तत्वों को नहीं जीता था।
बाबा:- नहीं जीता, अभी भी नहीं जीता। पाँच तत्वों को जीतने वाली बात ही उनके बुद्धि में नहीं है कि इस शरीर के रहते-रहते हम पाँच तत्वों को जीतेंगे, प्रकृतिजीत बनेंगे। वो प्रकृतिपति है कि झूठे ही गीता का भगवान बनकर बैठ गए?
जिज्ञासु:- नहीं, अपनी प्रकृति का, अपने शरीर का।
बाबा:- अरे अपनी हो चाहे पराई हो, प्रकृति पराई होती है या अपनी होती है? अरे! प्रकृति पराई है या अपनी है? (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) अरे जो हम पूछ रहे हैं उसका तो जवाब दो। प्रकृति को पराई कहेगें या अपनी कहेंगे? पराई है। फिर उसका क्या मोह? उनका तो मोह लगा रह गया इसलिये सूक्ष्म शरीर का बंधन पड़ गया। और हम तो ऐसा पुरुषार्थ करते हैं कि सूक्ष्म शरीर के बंधन से भी परे जावेंगे। एकदम ज्योतिबिन्दु।

Student: When Brahma Baba left his body in 69, did he not conquer the five elements?
Baba: He did not conquer them. He has not conquered [them] now either. The topic of gaining victory over the five elements itself is not in his intellect that he will conquer the five elements while being in this body and become victorious over nature. Is he the conqueror of nature (*prakritipati*)? Or did he falsely become God of the Gita?
Student: No, [gaining victory over] his own body…
Baba: *Arey*, whether it is his own or whether it belongs to someone else; is nature alien (*paraai*) or one's own? *Arey,* is nature alien or one's own? (The student said something.) *Arey,* first reply to the question that is being asked. Will nature be called alien or one's own? It is alien. Then why to have attachment to it? He continued to have attachment to it; this is why he had to be bound in the bondage of the subtle body. And we make such *purushaarth* that we will go even beyond the bondage of the subtle body. We will completely become a point of light.

समय: 19.42-22.26

जिज्ञासु:- जो शुरू-शुरू की अव्यक्त वाणियाँ हैं ब्रह्मा सम्पन्न बन गया, सम्पन्न स्टेज प्राप्त कर लिया। ऐसा कैसे?
बाबा:- क्या? बोलने वाला कौन है? (जिज्ञासु - ब्रह्मा की आत्मा।) तो ब्रह्मा की आत्मा जितना जानती है उतना ही बोलेगी या उससे उपर बोलेगी? (जिज्ञासु:- लेकिन शिवबाबा की याद रहती है ना।) हाँ, शिव बाबा की याद में तो है लेकिन जो शिव बाबा की याद में है वो उतना ही बोलेगी जितनी उसकी स्टेज है या उस स्टेज से ऊँचा बोलेगी? (जिज्ञासु - माना बेसिक नालेज की स्टेज से बोलेगी।) देवतायें जो बोलेंगे वो भाषा और शिवबाबा जो बोलेंगे वो भाषा दोनों में अन्तर होगा या नहीं होगा? (किसी ने कहा- होगा।) क्या अन्तर होगा? (किसी ने कुछ कहा।) हाँ जी, वो सिर्फ धारणा तक सीमित रहेंगे। योग की सिद्धि में नहीं पहुंचते देवतायें इस जीवन में। और वो ज्ञान की सिद्धि पर भी नहीं पहुँचते। जब तक प्रवेश न करें बीज रुप आत्माओं में। बीज रुप आत्माओं का आधार लेने के बाद ही उनको सिद्धि मिलेगी। और उतनी ही मिलेगी जितनी बीज रुप आत्मा को सिद्धि मिलेगी। उससे जास्ती नहीं मिलेगी। भागीदार हो जाते हैं। पुरुषार्थ में भी भागीदार हैं। जैसे राम कृष्ण की आत्मायें जन्म-जन्मांतर की साथी हैं। इस सृष्टि रुपी रंगमंच पर एक रचयिता का पार्ट बजाती है

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तो दूसरा रचना का पार्ट बजाती है। बाप और बच्चे कम्पनी या दुकान के साझीदार हैं या नहीं हैं? साझीदार हैं।

Time: 19.42-22.26
Student: In the initial *avyakt vanis* it has been mentioned that Brahma became perfect, he achieved the perfect stage.
Baba: What? Who is the speaker? (Student: The soul of Brahma.) So, will the soul of Brahma speak only to the extent it knows or will it speak more than that? (Student said: But it is in the remembrance of Shivbaba, isn't it?) Yes, it is certainly in Shivbaba's remembrance, but will the one who is in Shivbaba's remembrance speak only to the extent it has achieved the *stage* or will it speak higher than its *stage*? (Student: It means he will speak in the stage of basic knowledge). Will there be a difference between the language of the deities and the language that Shivbaba speaks? (Student: There wil be.) What will be the difference? (Student said something.) Yes. They (deities) will be limited only to [the topic of] *dhaaranaa*[3]. Deities do not achieve accomplishment (*siddhi*) in yoga in this life. And they do not achieve accomplishment in knowledge until they enter the seed form souls either. They will achieve accomplishment only after taking the support of the seed form souls. And they will achieve accomplishment only to the extent those seed form souls [whose body they enter] achieve [accomplishment]. They will not [achieve accomplishment] more than that. They become partners. They are partners in making *purushaarth* as well. For example the souls of Ram and Krishna are companions for many births. On this stage like world, one plays the role of the creator and the other plays the role of the creation. Are a father and children partners in a company or shop or not? They are partners.

जिज्ञासु:- राम कृष्ण की आत्माओं को जैसे लागु होता है वैसे हरेक एक बीज रुप और आधारमूर्त आत्माओं को ...

बाबा:- बिल्कुल। सब रचयिता और रचना का कनेक्शन है। एक रचयिता है कन्ट्रोलर और उनमें दूसरा रचना है कन्ट्रोल्ड होने वाला। तो क्या बनना अच्छा है? रचयिता बनना अच्छा है।

जिज्ञासु:- जब तक आत्मा 84 जन्मों का ...

बाबा:- पूरा चक्र न लगाए...

जिज्ञासु:- पूरा चक्र न लगाए और जीत भी ले।

बाबा:- एक्सपीरीयन्स्ड नहीं बनेगी तो जीत कहाँ से पायेगी?

जिज्ञासु:- वो खुद ही जीत लेगा तो प्रकृति जीत कहेंगे।

बाबा:- हाँ जी, हाँ जी।

Student: So, just as it is applicable to the souls of Ram and Krishna, every seed form and root form souls...
Baba: Definitely. There is a *connection* between every creator and creation. One is the creator, the *controller* and the other is the creation, the one who is *controlled*. So, what is it better to become? It is better to become a creator.
Student: Until the soul ... the cycle of 84 births…
Baba: … completes its cycle...
Student: It should complete the cycle as well as gain complete victory.
Baba: How can it gain victory unless it becomes *experienced*?
Student: When he himself gains victory then he will be called conqueror of nature.
Baba: Yes, yes.

समय: 22.30-23.51

जिज्ञासु:- बाबा शास्त्रों में गायन और महिमा सभी दिखाते हैं न वो संगमयुग की है न बाबा बोलते हैं। छोटा बच्चा कृष्ण को दिखाते हैं न?

[3] Putting into practice the divine virtues

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

बाबा:- कृष्ण को छोटा दिखाते हैं। उसकी महिमा जास्ती है। जो बड़ा कृष्ण है उसकी पूजा जास्ती दिखाते हैं या कम दिखाते हैं? चरित्र ज्यादा छोटे बच्चे के दिखाये हैं या बड़े बच्चे के दिखाये हैं? छोटे बच्चे के दिखाये हैं। माना जब छोटा है... क्या? तब उसने पुरुषार्थ किया है। जो पुरुषार्थ किया है वो कलंक प्राप्त करने का पुरुषार्थ है या कलंको से परे हो गया? सुनते हुये न सुनना। है तो छोटा बच्चा लेकिन जो छोटे बच्चे को कंलक लगते हैं मक्खन चुराया, गोपियों को भगाया, बच्चे पैदा किये, ऐसे-ऐसे जो गंन्दे-2 कलंक लगाए हैं, उन कलंकों पर ध्यान नहीं दिया। ऐसी स्टेज बनाई है बचपन में। तो उसका गायन है।

Time: 22.30-23.51
Student: Baba, Baba says that all the praises and glories in the scriptures pertain to the Confluence Age, don't they? Krishna is shown as a small child, isn't he?
Baba: Krishna is shown to be young. He is praised more. Is the older Krishna shown to be worshipped more or is he worshipped less? Are the acts (*caritra*) of the young child shown more or [are the acts] of the older child shown more? They have been shown [more acts] of the young child. It means when he is small... What? He made *purushaarth* at that time. Is it the *purushaarth* of bearing disgrace (*kalank*) or has he gone beyond disgraces? Not hearing while listening. He is a small child, but he did not pay attention to the dirty accusations levelled against him that he stole butter, made the *gopis* (herd girls) to elope, gave birth to children. He achieved such a *stage* in the childhood. So, he is praised.

समय: 23.56-25.54
जिज्ञासु:- बाबा, संगमयुग में बाप के साथ रहना बहुत अच्छा है न?
बाबा:- अरे! फिर साकार में आने का फायदा ही क्या है? साकार में आता किसलिये है? अरे! जगदम्बा ने, जगदम्बा का इतना उंच पद प्राप्त कर लिया, ये किस आधार पर कर लिया? साकार में संग का रंग सबसे जास्ती किसने लिया? जगदम्बा ने लिया। तो सबसे जास्ती मेला किसका बड़ा लगता है? जगदम्बा का मेला बड़ा लगता है। अब वो संग का रंग बच्ची के रुप में लिया, जगदम्बा बच्ची भी है कि नहीं है? बच्ची के रुप में लिया, माँ के रुप में लिया या पत्नी के रुप में लिया, या कोई भी रुप में लिया लेकिन संग तो लिया न। तो संग का रंग जरुर लगता है। और संग का रंग लगता है तो शक्ति भी मिलती है कि नहीं मिलती है? मिलती है। कोई-2 बच्चे अनुभव भी करते हैं मोबाइल से, कान से इतनी दूर से कनेक्शन होता है और निराकारी स्टेज अनुभव में आने लगती है। सब भूल जाते हैं। क्या याद रह जाता है? इससे क्या सबित हुआ? एक बाप याद रह जाता है और सारी दुनिया जो नीचे गिराने वाली है वह भूल जाती है ।

Time: 23.56-25.54
Student: Baba, it is good to be with the Father in the Confluence Age, isn't it?
Baba: *Arey!* Then what is the use of His coming in a corporeal form? Why does He come in a corporeal form? *Arey!* Jagdamba achieved such a high postion of Jagadamba; on what basis did she achieve it? Who was coloured by the company in the corporeal form the most? Jagdamba. So, whose biggest fair is organised t? A big fair of Jagdamba is organized. Well, whether she was coloured by the company in the form of a daughter; is Jagdamba also the daughter or not? [Whether] she was coloured [by the company] in the form of a daugher, in the form of a mother, in the form of a wife or in any other form, but she was certainly coloured, wasn't she? So, the colour of the company is definitely applied. And when the colour of the company is applied then do you also receive the power or not? You receive it. Some children experience through mobile; they get a connection [with the Father] through the ear from such a long distance and they start experiencing the incorporeal *stage*. They forget everything. What do they remember? What does it prove? They remember the one Father and forget the entire world that brings downfall.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय: 26.04-26.59

जिज्ञासु:- बाबा, भक्तिमार्ग में वेदकाल में अष्ट दिगपालों को दिखाया है।

बाबा:- आठ दिगपाल कोई दूसरे थोड़े ही हैं।

जिज्ञासु:- प्रश्न और है। और पुराण काल में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को ऊँचा दिखाया है।

बाबा:- हाँ, वो 8 दिगपालों में सबसे उंची स्टेज वाले तीन हैं। 8 दिगपाल भी उन तीनों को उंचा मानते हैं। लेकिन दिगपाल जो हैं वो फर्स्ट कैटेगरी के हैं तीन में से या सेकेण्ड विष्णु या ब्रह्मा की कैटेगरी के हैं? शंकर की कैटेगरी के हैं। (जिज्ञासु:- इसीलिए उसको पुरातन माना जाता है।) हाँ जी।

Time: 26.04-26.59
Student: Baba, in the path of *bhakti*, in the Vedic period, the eight *digpaal* (protectors/guards of eight directions) have been depicted.
Baba: The eight *digpaal* are none else.
Student: The question is not complete. In the Pauranic period Brahma, Vishnu and Shankar have been depicted to be higher.
Baba: Even among those eight *digpaals* three [personalities] are in the highest *stage*. The eight *digpaals* also consider those three to be high. But do the eight *digpaals* belong to the first *category* among the three or do they belong to the *second category* of Vishnu or the *category* of Brahma? They belong to the category of Shankar. (Student: This is why they are considered ancient.) Yes.

समय: 27.02-31.41

जिज्ञासु:- वार्तालाप में बोला है कोई भोग भोगते भी पवित्र बनते हैं, कोई योग से पवित्र बनते हैं, कोई सज़ा खा करके पवित्र बन जाते हैं ।

बाबा:- तो दोनो बातों में अंतर क्या है? अरे! एक सज़ा खा के पवित्र बनते हैं और एक ऐसा ग्रुप है जो अपना पुरुषार्थ करके पवित्र बनते हैं आठ। तो दोनों बातों में अंतर क्या पड़ जाता है? (किसी ने कहा- भोग भोगते माना क्या?) जो सज़ायें भोग करके पवित्र बनते हैं उनका पद कम हो जाता है। जितनी जास्ती सज़ायें उतना पद कम हो जाता है। (किसी ने कहा- भोग माना सज़ा।) सज़ा हो गई। सज़ा का फल मिल गया। सज़ा भी भोगते हैं, पवित्र भी बनते हैं लेकिन नुकसान क्या हो जाता है? पद नीचा हो जाता है। तो सज़ायें कम खाना अच्छा है या जास्ती सज़ायें खाना अच्छा है? और बिल्कुल सज़ाएं न खाना अच्छा है या थोड़ी बहुत सज़ायें खाना जरुरी है? ☺

Time: 27.02-31.41
Student: It has been said in a discussion that some become pure by enjoying pleasures, some become pure through yoga and some become pure by suffering punishments too.
Baba: So, what is the difference between both? *Arey*! One kind [of souls] become pure by suffering punishments and the other *group* is such that they become pure by making *purushaarth*; the eight [deites]. So, what is the difference between both the ways? (Student: What does 'by enjoying pleasures' mean?) The postion is reduced in case of those who become pure by suffering punishments. The more the punishments [they suffer] the more the reduction in their postion [takes place]. (Student: Pleasure means punishment.) It is a punishment. They received the punishment as a result [of actions]. They suffer punishments as well as become pure. But what is the loss? The postion is reduced. So, is it good to suffer less punishment or more punishments? And is it better to suffer no punishment or is it necessary to suffer punishments to some extent?

दूसरा जिज्ञासु:- बाबा आठ को ही सज़ा नहीं मिलेगी ना बाकि सबको सज़ा मिलती है।

बाबा:- तो पुरुषार्थ करना चाहिए ना नष्टोमोहा होने का, कि मेरा-मेरा? प्रेक्टिकल जीवन में भी तो ज्ञान में आने के बाद वो बात देखने में आनी चाहिए न। खुद भी अनुभव करें और देखने वाली दूसरी आत्मायें भी अनुभव करें कि इनका जीवन नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा है। ज्ञान में आने के बाद भी चिपक्कू रहे जैसे बन्दरिया बच्चे को पेट से महीने भर तक चिपकाये रहती है, तो फिर

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

नष्टोमोहा कैसे साबित होंगे? जबकि मुरली तो ठोक-ठोक के रोज बताती है। क्या बताती है? (किसी ने कहा- नष्टोमोहा।) नहीं। नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा वो तो आखरी लक्ष्य है लेकिन रोज की मुरली में एक बात बतायी गई है। एक शिवबाबा दूसरा न कोई। अभी कितना भी मेरा-मेरा कर लें लेकिन अंत में क्या कहेंगे? क्या करेंगे? मेरा काई नहीं। द्रोपदी अन्त में क्या कहती है? एक शिवबाबा दूसरा न कोई। सब बेकार हैं। सारे ही स्वार्थी हैं, अपने लिए मरने वाले हैं मान मर्तबे में।

A second student: Baba, only the eight [deities] don't suffer punishments, the rest suffer punishments.
Baba: So, you should make such a *purushaarth* to become *nashtomohaa*[4], shouldn't you? Or should you [say:] My, my? That thing should be visible even in the life in practice after entering the path of knowledge, shouldn't it? He should experience it himself and the other souls who see him should also experience that his life is *nashtomohaa smritilabdhaa*[5]. If someone sticks [to the *lokik* relatives] even after entering the path of knowledge - just as a female monkey keeps its [dead] child stuck to her abdomen (body) for a month - how will he be proved to be detached? Whereas the murli says strictly everyday. What does it say? (Someone said: *Nashtomohaa*.) No. *Nashtomoha smritilabdhaa*, that is the final goal. But one point is mentioned in the murlis everyday. One Shivbaba and no one else. Someone may say 'my my' to any extent now, but what will they say in the end? What will they do? No one is mine. What does Draupadi say in the end? One Shivbaba and no one else. Everyone is useless. Everyone is selfish. They are the ones who work hard for themselves, for their own respect and honour.

दूसरा जिज्ञासु:- वो दिन कभी आयेगा?
बाबा:- कभी आयेगा! आज बुला लो। अरे! जो आठ पुरुषार्थी होंगे वो अभी प्रत्यक्ष नहीं हो रहे हैं क्या? उन्होंने बुलाया कि नहीं बुलाया वो दिन? (जिज्ञासु - बुलाया।) तो दूसरे बुलाय सकते हैं, हम नहीं बुलाय सकते? अरे! नष्टोमोहा वाली जो स्टेज है जो दूसरो को भी देखने में आये, कोई उंगली न उठा सके कि ये नष्टोमोहा नहीं हैं।
तीसरा जिज्ञासु:- टाइम तो लगता है ना बाबा?
बाबा:- जितना ज्यादा टाइम लगेगा उतना घाटा रहेगा। (किसी ने कहा- वो तो है।) फिर? आठ के लिये तो अभी बोल दिया है कि इतना लम्बा टाइम नहीं लगेगा जितना और मणकों को टाईम लगता है लम्बा।
तीसरा जिज्ञासु:- आठ से भी और मणकों को ज्यादा लगता है?
बाबा:- हाँ, ये जल्दी-जल्दी प्रत्यक्ष होंगे। जिनको नंबर लेना है ले लो। ☺
तीसरा जिज्ञासु:- बाबा ये भी कहते हैं 100 कि माला शीघ्र बन जाती है। 8 की माला बनना मुश्किल है।
बाबा:- हाँ, उस समय बोला अभी तो नहीं बोला? जब से अष्टदेवों की बात शुरु हुई है तब से तो नहीं बोला। पहले बोला।

The second student: When will that day come?
Baba: When will it come! Bring it today. *Arey!* Are the eight *purushaarthis*[6] not being revealed now? Did they bring that day or not? (Student: They brought it.) So, when others can bring, can't we bring? *Arey*! The *stage* of *nashtomohaa* should be visible to others as well. Nobody should be able to raise a finger that this one is not *nashtomohaa*.
Third student: Baba, it takes time, doesn't it?
Baba: You will suffer more loss if you take more time. (Student: That is true.) Then? It has been said for the eight that it will not take as much long time for them that it takes for others [to be revealed].
The third student: Do the beads other than the eight take more time?

[4] Conquerer of attachment
[5] Free of attachment and regaining the awareness of the self and the Father.
[6] Those who make spiritual effort

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

Baba: Yes. They will be revealed in a quick succession. Whoever wants to take the *number* (rank) can take it. ☺
The third student: Baba also says that the rosary of hundred is formed soon. It is difficult to form the rosary of the eight.
Baba: Yes, it was said at that time. It was not said now, was it? It has not been said ever since the topic of the eight deities has started? It was said earlier.

समय: 31.45-34.27

जिज्ञासु:- बाबा अभी छोटी मम्मी विदेश में है न।

बाबा:- तो? अच्छे-2 जो पुरुषार्थी और अच्छे-2 जो भारत के जहीन बच्चे हैं, अच्छे-अच्छे पढ़ाई लिखाई पढ़ने वाले हैं, वो सब विदेश में जा रहे हैं या स्वदेश में हैं? (जिज्ञासु-विदेश में जा रहे हैं।) तो ऐसे ही वो भी अच्छा बच्चा है। जो बाप को प्रत्यक्ष करने वाले हैं विदेशी, उनकी सेवा में लगा हुआ है। हाँ, तो आप पूछने वाले क्या थे?

जिज्ञासु:- ब्राड ड्रामा में उसका पार्ट क्या होगा?

बाबा:- अरे! ऊँचा काम करेगा तो राजधानी में ऊँचा पद नहीं मिलेगा? सबसे ऊँचा काम क्या है? बाप को प्रत्यक्ष करना।

दूसरा जिज्ञासु:- स्थूल विदेशी बाप को प्रत्यक्ष करेंगे या भारत के विदेशी?

बाबा:- जो भारत के विदेशी हैं वो स्थूल नहीं है? (जिज्ञासु - स्थूल में हैं।) स्थूल में हैं न। (जिज्ञासु ने कुछ कहा।) तो क्या हुआ? जो आखरी प्रत्यक्षता होगी वो दुनिया के 500 करोड़ के हिसाब से होगी या भारत के अन्दर ही होगी? जो भारत के अन्दर प्रत्यक्षता होनी थी वो तो हो रही है।

Time: 31.45-34.27
Student: Baba, now the junior mother is in the foreign countries (*videsh*), isn't she?
Baba: So? Are all the nice *purushaarthii*, the intelligent children of India, the students who study well going abroad or are they living in *swadesh*[7]? So, similarly she is also a nice child. She is engaged in serving the foreigners who are going to reveal the Father. Yes, so what were you asking?
Student: What will be her part in the broad drama?
Baba: *Arey!* If someone performs a high task, then will he not get a high postion in the capital? What is the highest task? To reveal the Father.
Another student: Will the physical *videshis* (foreigners) reveal the Father or the *videshis* of India?
Baba: Aren't the *videshis* of India physical? (Student: They are physical.) They are in physical, aren't they? (Student said something.) So, what happened? Will the final revelation take place from the point of view of a world of five billion (500 crores) or will it take place only in India? The revelation that was to take place in India is taking place.

दूसरा जिज्ञासु:- माना ये अपनी नम्बर से करेंगे वो अपने नम्बर से करेंगे।

बाबा:- हाँ जी।

जिज्ञासु:- एक सी.डी. में बताया बाबा कि भारत के विदेश से स्वदेशी ...।

बाबा:- स्वदेशी जल्दी प्रत्यक्ष होंगे?

जिज्ञासु:- उन लोग ही बाप को प्रत्यक्ष करेंगे, स्वदेशी।

बाबा:- स्वदेशी प्रत्यक्ष करेंगे? विदेशी नहीं करेंगे ऐसा कहीं बोला? माताजी को कोई नई पढ़ाई पढ़ाने लगा। (कोई ने कहा - स्वदेशी आने से जल्दी-जल्दी निकलेगा।) हाँ, भारत के जो हैं मूढ़ बुद्धि वो विदेशों की खोज को, अविष्कार को जल्दी मानते हैं या भारतवसियों के अविष्कार को जल्दी मानते हैं? विदेशियों के अविष्कार को मानते हैं। उनकी टेंडेन्सी ऐसा बन गई। घर का जोगी जोगिया और

[7] The country India.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

आन गांव का सिद्ध। घर की मुर्गी दाल बराबर। विदेश से आवाज निकलेगी तब दिल्ली उसको रिसीव करेगी। भारत में आवाज निकलेगी नहीं मानेंगे।

The other student: It means that these (*videshis* of India) and those (foreigners abroad) will reveal [the Father] on their time.
Baba: Yes.
Student: Baba it is said in a CD that from the foreign of India, the Indians…
Baba: Will the *swadeshis* be revealed soon?
Student: They, the *swadeshis* themselves will reveal the Father.
Baba: Will the *swadeshis* reveal Him? The *videshis* will not reveal Him? Has this been said anywhere? Someone has started teaching a new knowledge to *mataji*. (Someone said: When the *swadeshis* come, the revelation will take place faster.) Yes, do the ignorant people of India accept the inventions, discoveries of the foreign countries sooner or do they accept the inventions of the Indians sooner? They accept the inventions of the foreigners [soon]. It has become their *tendency*. A prophet is seldom honoured in his own land. The chicken cooked at home is like a curry of pulses. Delhi will *receive* the sound when it comes from the foreign countries. When the sound emerges in India, they won't accept it.

समय: 34.49-45.32

बाबा:- एक प्रश्न आया है जो शारीरिक मेहनती तबक्का है, चाहे भारत में हो और विदेश में हो, शारीरिक मेहनती बहुत हैं। मेहनतकश हैं और बहुत मेहनत करते हैं, वो कौन हैं? भारत के किसान। कौन? भारत के किसान। ऐसे मजदूर वर्ग भी है। लेकिन मजदूरों से भी जास्ती मेहनत करने वाले कौन हैं? भारत के किसान और ज्यादा घाटे में कौन हैं? भारत के किसान ही ज्यादा घाटे में हैं। आज कहीं बड़े-बड़े ऑफिस में चले जाओ, कोई बड़े-बड़े कल-करखानों में चले जाओ, कहीं भी जाकरके देखो, जो ज्यादा मेहनत करने वाले होंगे वो घाटे में रहते हैं या फायदे में रहते हैं? (सभी ने कहा-घाटे में।) उनसे और ज्यादा काम लिया जाता है। जो गुण्डे बन करके रहते हैं, मेहनत कुछ नहीं करते और ही दूसरे के उपर अधिकार जमाते रहते हैं वो फायदे में रहते हैं। ऐसी हालत आज के भारत के किसानों की है। बहुत मेहनत करते हैं। लेकिन किसानों के उपर कर्जा चढ़ता ही चला जाता है। (कोई ने कहा- सरकार तो माफ कर रहा है ना अभी।) सबका माफ होता है क्या? कि जिनकी चालू हालत है, जो चालू हैं उन्हीं का माफ होता है?

Time: 34.49-45.32
Baba: A question has been asked. The physically hardworking section, whether it is in India or abroad, they work very hard through their body. They are hard working people and they work very hard; who are they? The farmers of India. Who? The farmers of India. In a way there is the labourer class as well. But who works harder than the labourers? The farmers of India. And who suffers more loss? The farmers of India themselves suffer more loss. Nowadays you may go to any big *office*, any big factory, you may go anywhere and see, do those who work hard suffer loss or do they reap benefits? (Everyone said: They suffer loss.) They are made to work even more. Those who act like bullies (*gunde*), who do not make any effort and keep dominating others, they reap benefits. This is the condition of today's farmers of India. They work very hardbut keep on accumulating debts. (Someone said: The Government is exempting [them] from the loan, isn't it?) Is it exempted in case of everyone? Or is it exempted only in case of those in a good working order?

किसान की स्थिति भारतवर्ष में गिरती जा रही है या उठती जा रही है? भारत में 70 परसेन्ट किसान हैं वो 70 परसेन्ट किसान साहूकार बनते जा रहे हैं या और ही गरीबी की रेखा से नीचे होते जा रहे हैं? किसान ज्यादा भुखमरी से मर रहे हैं या दूसरे वर्ग वाले ज्यादा भूखमरी से मर रहे हैं? (किसीने कहा - किसान।) तो प्रश्न है किसान सबसे जास्ती मेहनत करते हैं। तो बेहद के अर्थ में किसान कौन हैं? (किसी ने कहा- प्रेक्टिकल पार्टी।) नहीं, प्रेक्टिकल पार्टी तो है, प्रेक्टिकल पार्टी में क्या शारीरीक मेहनत करने वाले नहीं हैं क्या? कौन हैं? (किसी ने कुछ कहा।) कया? चन्द्रवंशी?

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

वो शारीरीक मेहनत ज्यादा करते हैं? ज्ञान सुनाने की मेहनत नहीं करते? (किसी ने कहा- करते हैं, फिर भी दूसरे धर्मों से दबाया जा रहा है।) हाँ, जो बेसिक में हैं, वहां से भी दबाये जा रहे हैं और एडवांस ज्ञान तो वो पकड़ते ही नहीं। उन किसानों की बात छोड़ दो वो भी हद में हैं या बेहद में? बेसिक वाले जो किसान हैं उनको हद के किसान कहेंगे या बेहद के किसान कहेंगे? (किसीने कहा - बेहद के।) बेहद के कहेंगे? उन्हें बेहद का ज्ञान है? (कोई ने कहा - दुनिया के हिसाब से...) हाँ, दुनियां के हिसाब से और यहाँ ब्राह्मणों के दुनिया के हिसाब से?

Is the condition of the farmers in the India deteriorating or is it rising? 70 *percent* of the Indian population is farmers. Are those 70 percent farmers becoming prosperous or are they going below the poverty line? Are the farmers dying of starvation or are the people of the other sections dying of starvation more? (Someone said: The farmers.) So, the question is that the farmers work hard the most. So, who are the farmers in the unlimited? ☺ (Someone said: Practical party.) No, the *practical party* is certainly there; are there not people who work hard physically in the *practical party*? Who are they? (Someone said something.) What? The *Chandravanshis*? Do they work hard physically more? Don't they make the efforts to narrate knowledge? (Student: They make, even then they are being supressed by the other religions, aren't they?) Yes, those are in the *basic* [knowledge] are also suppressing them. And they do not grasp the *advance* knowledge at all. Leave the topic of those farmers. Are they also in the limited [farmers] or in the unlimited [farmers]? Will the farmers in the *basic* knowledge be called the limited farmers or the unlimited farmers? (Someone said: The unlimited farmers.) Will they be called the unlimited [farmers]? Do they have the unlimited knowledge? (Someone said: From the point of view of the world...) Yes, from the point of view of the world and what about the point of view of the Brahmin world here?

जो बेहद के किसान हैं उनकी भी यही हालत है। कर्मणा सेवा बहुत करते हैं लेकिन कर्मणा सेवा का जो उजूरा मिलना चाहिए, वो उजूरा उनको प्राप्त नहीं होता है। जो मजदूर तबक्का है उनमें कन्ट्रोलर भी बैठे हुए हैं। लेकिन किसानों में कोई के उपर कन्ट्रोल करने की टेडेन्सी नहीं है। अपनी मेहनत करते हैं, अपना कमाते हैं, और कर्ज के ऊपर कर्ज चढ़ाते चले जाते हैं। उनको न ज्ञान का पेय उतना मिलता है और न याद का भोजन उतना मिलता है । वो कौन सा तबक्का है? अच्छा, ब्राह्मणों में अधर कुमार भी हैं, कुमार भी, कुमारीयाँ भी हैं, अधर कुमारियाँ भी हैं। सबसे जास्ती मान मर्तबा लेने वाला ग्रुप कौन सा है? चारों में? कुमारियाँ। ईश्वर के तरफ से भी उनको बहुत प्रिफरेन्स मिलता है और जो ब्राह्मण परिवार है वो भी उनको बहुत रिगार्ड देता है। लेकिन जो निकलने वाले जिज्ञासु हैं जिनको बाबा ने कहा है सार, मक्खन वो कुमारियों के द्वारा ज्यादा निकल रहे हैं या अधर कुमारियों के द्वारा ज्यादा निकलते हैं?

The unlimited farmers are also facing the same condition. They do a lot of physical service, but they do not receive the returns (*ujuraa*) for the physical service that they should receive. There are controllers sitting even among the labourers class. But there is no *tendency* of controlling someone among the farmers. They make their own efforts; they earn their own income and they go on accumulating debts. They neither get much water of knowledge nor much food of remembrance. Which is that section? *Acchaa!* There are *adharkumaars* (men who are married and lead a pure life), *kumaars* (bachelors), *kumaaris* (virgins) as well as *adharkumaaris* (women who are married and lead a pure life) among the Brahmins. Which *group* receives the maximum respect and honour among all the four? The *kumaaris*. They receive a lot of *prefercence* from God. And the Brahmin family also gives a lot of *regard* to them. But the students who emerge [in knowledge], for whom Baba has said that they are the essence, the butter, are they emerging through the *kumaaris* or through the *adharkumaaris* more?

(किसीने कहा - कुमारियों के द्वारा।) हे! मुरली में रिजल्ट दे दिया है। अन्दर वाले रह जावेंगे और बाहर वाले ले जावेंगे। और भी बोला हुआ है माताएं कृष्ण के मुख में मक्खन देती हैं। ये बोला अधर कुमार देते हैं? अधर कुमार अगर करेंगे भी मक्खन निकालने की सेवा, सेवाधारी बच्चे निकालेंगे भी वारिसदार तो उनको अपने कन्ट्रोल में करने की ज्यादा हुज्जत रहती है क्योंकि स्वभाव से ही

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

दुर्योधन हैं। या तो कुमारियों, की माताओं की सेवा करेंगे तो उनको अपने प्रभाव में लेने की ज्यादा हुज्जत करेंगे कि हमारे कन्ट्रोल में बनी रहें। तो सबसे ज्यादा घाटे में चारो में से कौन हैं? अरे! अधरकुमार? अधरकुमारों को तो अपनी गृहस्थी का चक्कर लगा रहता है। वो ज्ञान की खेती ज्यादा कर पाते हैं या उनके मुकाबले कुमार ज्यादा स्वतंत्र हैं? कुमार ज्यादा स्वतंत्र हैं। लेकिन उनको प्रिफरेंन्स कुछ भी नहीं मिलता। ऐसे भी नहीं उनको सरेण्डर करके समझा जाए। क्या? बाबा उनको क्या कहते हैं? अपन को सरेण्डर खुद समझो। सरेण्डर माने नहीं जायेंगे। क्योंकि खग्गा मछली का पार्ट बजाने वाले हैं। आज बड़े तेजी से तैर रहे हैं ज्ञान के तेल में लेकिन कब उखड़ करके बाहर गिर पड़ें ये पता ही नहीं चलता।

(Someone said: Through the *kumaaris*.) No. The *result* has been given in the murli: The insiders will lag behind and the outsiders will take away [the inheritance]. It has also been said that the mothers put the butter in Krishna's mouth. ☺ Has it been said that the *adharkumaars* put it? Even if the *adharkumaars* do the service of taking out the butter, even if they bring [the serviceable heir children in knowledge], they attempt to bring them under their *control* because they are Duryodhans[8] by nature. If they serve the virgins or mothers, they will attempt more to bring them under their influence [they think] they should remain under our *control*. So, who suffers the maximum loss from among the four [groups]? *Arey! Adharkumaars*? *Adharkumaars* are worried about their household. Are they able to plough the fields of knowledge more or are the *kumaars* more independent when compared to them? *Kumaars* are more independent. But they do not get any *preference* at all. It is not that they are considered to be surrendered either. What? What does Baba tell them? Consider yourself to be surrendered. They will not be considered to be surrendered because they play the *part* of a *khaggaa* fish[9]. They swim very swiftly today in the oil of knowledge. But one cannot know when they will fall out of it.

तो सेवा शारीरीक मेहनत सबसे जास्ती कुमार कर रहे हैं। ज्ञान की भी करते हैं, ज्ञान की खेती भी करते हैं, लेकिन प्रिफरेन्स उनको कुछ भी प्राप्त नहीं हो पाता। इसलिये रिजल्ट क्या होता है? कुमारियाँ परसेन्टेज में ज्यादा जिन्दा हैं ज्ञान में। अधर कुमारियाँ भी ज्यादा जिन्दा हैं, भले बन्धन में हैं, अधर कुमार भी ज्यादा जिन्दा रहते हैं, लेकिन सबसे ज्यादा माया मौत किनकी लाती है? कुमारों की। और दुनिया में भी सबसे जास्ती मरते कौन हैं? किसान मरते हैं न, जो ज्यादा शारीरीक मेहनत करने वाले हैं। वो ही मर रहे हैं। भुखमरी से भी मर रहे हैं। और अभी तो अकाल पड़ने वाला है। क्या होगा अकाल में? एक बूंद पानी का भी नहीं मिलेगा। माया ऐसी हालत बनाय देगी। एक-एक अन्न का दाना के लिए लोग तरसेंगे। नोटों की गड्डियाँ काम नहीं आवेंगी।

So, it is the *kumaars* who are doing the maximum service and physical hard work. They serve through knowledge as well, they do the farming of knowledge as well, but they do not receive any *preference*. This is why what is the *result*? *Kumaaris* are alive in knolwedge in a greater percentage. Many *adharkumaaris* are also alive although they are in bondage; many *adharkumaars* also remain alive, but whom does Maya kill the most? The *kumaars.* And who die the most in the world? The farmers die, don't they? They do more physical hard work. It is they who are dying. They are dying of starvation as well; and there is going to be a drought now. What will happen in the drought? You will not get even a drop of water. Maya will make your situation like this. People will long for a single grain of food. Bundles of notes will be of no use.

समय: 45.36-50.35

जिज्ञासु:- युगादि का बेहद में क्या अर्थ है?

बाबा:- नया युग आदि होता है, तो नये युग का नाम क्या है? नये युग का नाम क्या है? सतयुग। और सतयुग की आदि सन् 36 से मानी जाए या उससे पहले ही तारीख शुरु हो जाती है? (किसी ने कहा- 18 से शुरू हो जाती है।) हाँ, पहले से ही नई तवारीख शुरु हो जाएगी नई दुनिया की। यानि

[8] A villainous character in the epic Mahabharata
[9] Name of a fish

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

पहले ही नई दुनिया का फाउन्डेशन और उद्घाटन हो जाता है। उसकी यादगार में हम क्या मनाते हैं? पहला महीना का नाम क्या है? चैत्र मास। तो हमारा ये भी युगादि है। चेत जाओ। चैत्र मास में क्या हो जाओ? चेत जाओ। चैतन्य आत्मा बन जाओ। मुर्दापन खत्म हो जाये।

Time: 45.36-50.35
Student: What is the unlimited meaning of *yugaadi*?
Baba: What is the name of the new age that begins? What is the name of the new age? The Golden Age (*Satyug*). And should the beginning of the Golden Age be considered from the year 1936 or does the date begin even before that? (Someone said: It begins from 18.) Yes. The new date of the new world will begin already before. It means that the [laying of the] *foundation* for the new world and its inauguration takes before itself. What do we celebrate in its memorial? What is the name of the first month? The month of *Caitra*. So, this is also the beginning of our age (*yugaadi*). Become conscious (*cet jaao*). What should you become in the month of *Caitra*? Become conscious. Become a living soul (*caitanya aatmaa*). The corpse like nature (*murdaapan*) should end.

जिज्ञासु:-गुड़ और नीम का पत्ता उसका बेहद का अर्थ क्या है?
बाबा:- गुड़ और नीम का पत्ता, क्या मतलब? क्या करते हैं उसका? गुड़ और नीम को क्या करते हैं? युगादि में नीम का पत्ता कड़ुआ और गुड़, माने मीठा...। (किसीने कहा- इमली) और खट्टा। खट्टा भी, मीठा भी और कड़ुआ भी। मुँह खट्टा कर दिया, मुँह मीठा कर दिया। वाह भाई! कहते हैं न। और कड़ुआ मुँह हो जाता है कड़ुई चीज खाने से। तो कैसे मुँह करते हैं?

Student: What is the unlimited meaning of jaggery (*gur*) and neem leaves?
Baba: Yes, what is meant by jaggery and neem leaves? What is done with it? What is done to jaggery and neem? In *yugaadi*... the neem leaves [means] bitter and jaggery means sweet … (Someone said: Tamarind.) …and sour. There is sourness, sweetness as well as bitterness. People say "you have made the mouth sour; you have made the mouth sweet, wow, brother!" (Baba is showing with facial expressions), don't they? ☺And how do they make their face when the mouth becomes bitter, when they eat a bitter thing?

तो ये तीन प्रकार के बच्चे भी हैं। तीन प्रकार के रंग देने वाले है दुनिया में, कोई खट्टा मुँह कर देंगे। कोई ऐसे पुरुषार्थी भी हैं जो मीठा मुँह करेंगे। क्या? कोई कड़ुआ मुंह करेंगे, कोई मीठा मुँह करेंगे, कोई खट्टा मुँह कर देंगे। अच्छे बच्चे कौन से हुए? जो मीठा मुँह करें। तो तीन प्रकार के हैं। हमारी ब्राह्मणों के दुनिया में ही होंगे या बाहर होंगे? ब्राह्मणों के दुनियां में ही होंगे। कौन-2? (कोई ने कहा- सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी।) सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी और? (किसी ने कहा- इस्लाम।) नहीं इस्लाम वंशी कैसे? (कोई ने कहा- सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी मीठा बनाने वाले हैं।) सूर्यवंशी मीठा बनाने वाले हैं? (कोई ने कहा- अन्त में तो रिजल्ट होगा ।) नहीं।

So, there are three kinds of children as well. They give three kinds of colours to the world; some will make your mouth sour; some are such *purushaarthi* who will make the mouth sweet. What? Some will make the mouth bitter; some will make the mouth sweet and some will make the mouth sour. Who are the nice children? The ones who make the mouth sweet. So, there are three kinds [of children]. Will they be in our Brahmin world itself or will they be outside? They will be in the Brahmin world itself. Who all [are they]? (Someone said: *Suryavanshi*[10], *Chandravanshi*[11]) *Suryavanshi, Chandravanshi* and...? (Someone said: *Islamvanshis*[12].) No. How are they the *Islamvanshis*? (Student: *Suryavanshis*, *Chandravanshis* make the mouth sweet.) Are the *Suryavanshis* the ones who make [the mouth] sweet? (Student: The result will be [good] in the end, won't it?) No.

[10] Those belonging to the Sun dynasty
[11] Those belonging to the Moon dynasty
[12] Those belonging to the Islam dynasty

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

तीन पार्टियाँ हैं एडवांस पार्टी में। एक प्रैक्टिकल पार्टी मुख मीठा कर देगी। क्या? प्योरिटी में मिठास होता है या इम्प्योरिटी में मिठास होता है? प्योरिटी में मिठास होगा। मीठा मुंह करेंगे। एक है असल फर्रख्खाबादी। कैसा मुंह कर देंगे? कड़वी दवाई है। कड़ुआ मुंह कर देंगे। ऐसे पेड़ों में सबसे ज्यादा अच्छा वायब्रेशन बनाने वाला कौन सा पेड़ है? नीम। हैं तो अच्छाई के लिये लेकिन जब उनको चबाया जाता है तो कैसे लगते हैं? बहुत कड़वे लगते हैं। हैं गुणदायी। ऊपर से कड़ुए और अन्दर से फायदेमन्द। सबसे जास्ती फायदेमन्द। और एक हैं मुंह खट्टा कर देंगे। ऐसी-2 परिक्षायें लेने के निमित्त बनेंगे कि सारा संगमयुग का पुरुषार्थ बेकार नज़र आयेगा।

There are three parties in the *advance party*; one is the *practical party* that will make the mouth sweet. What? Does *purity* have sweetness or does *impurity* have sweetness? There will be sweetness in *purity*. They will make the mouth sweet. One kind [of people] are the true *Farrukhabadi* (residents of Farrukhabad). How will they make the mouth? It is a bitter medicine. They will make the mouth bitter. As such, which tree among the trees creates the best atmosphere? The neem [tree]. It is for goodness. But when it is chewed, how does it taste? It tastes very bitter. It is beneficial. They are bitter outwardly, but beneficial inside. They are the most beneficial ones. And the other kind [of people] is such that they will make the mouth sour. They will become instruments to test us in such ways that the entire *purushaarth* of the Confluence Age will appear to be a waste.

समय: 50.42-52.30

जिज्ञासु:- बाबा, अमृतवेले में बाबा को याद करना हो तो इमर्ज करके याद करना चाहिए, मिनी मधुबनों में याद करना चाहिए या कम्पिल में याद करना चाहिए, कौन सा अच्छा है बाबा?

बाबा:- एक बात और रह गई, सम्मुख बैठ करके अमृतवेले याद किया जाय सो ज्यादा अच्छा या कम्पिल में याद किया जाय या दूसरे मधुबन में याद किया जाए या घर में बैठ करके अमृतवेले इमर्ज करके याद किया जाए वो अच्छा? आपने बढ़िया ते बढ़िया क्यों छोड़ दिया? (जिज्ञासु-सन्मुख हमेशा नहीं मिलता है ना।) दुनिया में अप्राप्त कौन सी वस्तु है? ब्राह्मणों के खजाने में ऐसी कोई चीज नहीं है जो अप्राप्त हो।

Time: 50.42-52.30

Student: Baba, when we remember Baba at *amritvela*[13], should we bring Him [in front of us] and remember, should we remember Him at the *minimadhubans* or in Kampil? Which one is better, Baba?

Baba: One more topic was left; Is it better to remember Him sitting face to face at *amritvela* or is it better if you remember Him at Kampil , at other Madhubans or bring [Him] in front of you at *amritvela* sitting at home? Why did you leave the best option? (Student: We don't find Him face to face always, do we?) Which is the thing that is unachievable in the world? There is nothing that is unachievable in the treasury of the Brahmins.

दूसरा जिज्ञासु:- बसप्पा भाई को साथ में टूर लगाना है।

बाबा:-अच्छा-2 । हाँ जी । टूर भी थोड़े दिन का होता है या सदा काल का होता है? (जिज्ञासु - थोड़े दिन का।) तो फिर? चार दिन की चांदनी फिर अंधेरी रात। आखरी ट्रेन चलेगी और उस आखरी ट्रेन चलते समय जिनको ट्रंक काल आवेगा और बाप के पास पहुँच जावेंगे वो स्टेज तो सदाकाल के लिए ऊँची स्टेज हो जावेगी।

Another student: Brother Basappa wants go on tour with [Baba].

Baba: *Acchaa, Acchaa*. ☺ Yes. Does the *tour* also last for a few days or forever? (Student: For a few days.) So? It is moonlight for four days and then a dark night again. The last *train* will start; those who get a *trunk call* (telegram) when the last train starts and will come to the Father, that *stage* will become the high *stage* forever.

[13] Early morning hours before sunrise.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय: 52.38-53.03

जिज्ञासु:- बाबा, माउंन्ट आबू में घर बनाना बहुत फायदा है न अभी?

बाबा:- हाँ, लो! जहां भगवान आकरके पढ़ाई पढ़ाता हो वो भगवान का जो घर है वो ऊँची स्टेज वाला नहीं है? तो वहाँ रहने वालों की ऊँची स्टेज नहीं बनेगी? बनेगी।

Time: 52.38-53.03
Student: Baba, it is very beneficial to build a house at Mount Abu now, isn't it?
Baba: Yes, *lo*! The place where God comes and teaches, God's house in a high *stage*? So, will those who live there not achieve a high *stage*? They will achieve.

समय: 53.25-56.01

जिज्ञासु:- बाबा, भक्तिमार्ग में कहते हैं मनमथ आकरके शंकर की तपस्या बन्द कर देता है। इसका बेहद में अर्थ क्या है?

बाबा:- मनमथ, मनमथ माने काम देव। कामदेव आकरके शंकर की परीक्षा लेता है। परीक्षा तो सबकी होती है। अकेले शंकर की होती है क्या? नहीं। परीक्षा तो काम देव सबकी लेता है। लेकिन विशेष बात क्या है? जो सबमें नहीं होती है एक शंकर में होती है? क्या होती है? परीक्षा तो सबकी हो भले लेकिन परीक्षा का रिजल्ट काम देव भस्म हो जाय। जल भुन के राख हो जाए। क्या? ऐसा कर्म करे जो काम देव जल करके, भुन करके राख हो जाए, भस्म हो जाए। राख, कुछ भी न कर सके। ऐसी स्टेज बनाय लेना।

Time: 53.25-56.01
Student: Baba, it is said in the path of *bhakti* that Shankar's *tapasya* was stopped by Manmath. What is its unlimited meaning?
Baba: Mammath. Manmath means the deity of lust (*kaamdev*); Kaamdev comes and tests Shankar; everyone is certainly tested. Is it Shankar alone? No. Kaamdev tests everyone. But what is the specialty that is not present in everyone but in Shankar alone? What is it? Everyone undergoes the test, but the *result* of the test should be that Kaamdev is reduced to ashes. He should be burnt to ashes. What? He should perform such actions that Kaamdev is burnt to ashes. Ash. He should not be able to do anything. He should achieve such a *stage*.

दूसरा जिज्ञासु:- फिर भी अन्त में कहा जाता है रति माँग लेते हैं शंकर से। रति पति के लिये फिर मांग करती हैं।

बाबा:-तो काई मांगता है तो उसे देना चाहिए कि नहीं देना चाहिए? अरे! कोई भिखमंगा है भगवान के सामने जा करके भीख मांगता है तो उसे कुछ न कुछ देना चाहिए या नहीं देना चाहिए? देना चहिए। तो उसे भी मिल जाता है। होई है काम अनंग। क्या? चलो हमने जिंदा कर दिया। (जिज्ञासु- द्वापर के बाद।) हाँ, नई दुनिया में होगा लेकिन अंग नहीं होगा। काम विकार की मार करने वाला वहां अंग काम ही नहीं करेगा। काम विकार होगा नहीं तो सतयुग में बच्चे पैदा होंगे कि नहीं होगें? होंगे। कैसे होंगे? अनंग स्टेज होगी।

Another student: However it is said in the end that Rati takes him back from Shankar. Rati requests for her husband [to be brought back to life].
Baba: If someone asks [for something], then should he be given that or not? *Arey!* If a beggar seeks alms from God, then should he be given something or not? He should be given [something]. So, she gets it, too. Lust becomes bodiless (*Kaam anang*). What? [Shankar says:] Alright, I brought him back to life. (Student: After the Copper Age...) Yes, he will be present in the new world; but the organ will not be present. The organ that causes the attack of lust will not at all work there. The vice of lust will be there. Otherwise, will children be born in the Golden Age or not? They will be born. How will they be born? The *stage* will be [like the one] without a body.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय: 56.16-01.02.42

बाबा:- एक प्रश्न आया है- सदैव निश्चय बुद्धि होने के लिए क्या करें?

उत्तर:- (किसी ने कहा- बाप की याद।) लेकिन याद भी कौन करेगा? हो अनिश्चय बुद्धि, घड़ी-2 उसको बाप के पार्ट के उपर अनिश्चय आता हो, ऐसा कैसा बाप हो सकता है। बाप भी ऐसा होता है क्या? तो याद करेगा या बुद्धि दूर भगेगी? वो तो बुद्धि दूर भाग जायेगी। याद में भी विजयी कौन होगा? जो निश्चय बुद्धि होगा वही विजयी होगा। तो निश्चयबुद्धि कैसे हुआ जाय? क्या करें जो निश्चय बुद्धि हो जाए? (कोई ने कहा- मुरलीधर से प्यार माना मुरली से प्यार।) हाँ। नहीं, प्यार भी तो उसी से होता है जिसके गुण बुद्धि में बैठें। और जिसके अवगुण बुद्धि में बैठेंगे उससे प्यार पैदा होगा? नहीं होगा। तो निश्चय बुद्धि कैसे बने सवाल ये है।

Time: 56.16-01.02.42

Baba: A question has been asked. What should we do in order to have faith forever?

Answer: (Someone said: Remember the Father.) But who will remember as well? If someone is the one with a doubting intellect; if he has doubt regarding the Father's *part* every moment [and thinks:] how can this person be the Father? Is even the Father like this? So, will he remember [the Father] or will his intellect run far away from Him? The intellect itself will run far away. Who will be victorious in remembrance as well? The one who has a faithful intellect, only he will become victorious. So, how should we become the one with a faithful intellect? What should we do to have a faithful intellect? (Someone said: Love for the Murlidhar[14], means love for the murli.) Yes. No, the one whose virtues sit in the intellect will be loved. And will love emerge for the one whose bad traits sit in the intellect? It won't. So, the question is how to have a faithful intellect?

जिज्ञासु:- बाबा के मुरली में तो अवगुण नहीं होंगे । मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार।

बाबा:- मुरली किसे कहते हैं? (जिज्ञासु-बाबा की बात, श्रीमत।) अरे! बाबा को नहीं पहचाना तो मुरली कैसे? कागज की मुरली को मुरली कहें? (जिज्ञासु-कागज़ की हो या सी.डी हो...) अच्छा! कागज की हो तो भी चलेगा? (किसी ने कहा- वो भी थर्ड क्लास मुरली कहा जायेगा।) तो थर्ड क्लास मुरली अगर बी.के. लोग पढ़ते हैं उनका प्यार हो जाय कागज की मुरली से तो काम चल जायेगा? (किसीने कहा- कागज की मुरली से प्यार नहीं चलेगा।) तो फिर? बात खत्म हो गई। मुरली से प्यार माना मुरलीधर से प्यार। और मुरली भी फर्स्ट क्लास चाहिए। क्या? थर्ड क्लास और सेकेण्ड क्लास नहीं। फर्स्ट क्लास मुरली कौन सी है? जो सन्मुख मुख के सामने प्रेक्टिकल साकार में आकरके बाप सुनावे। तो साकार में बाप सुनाय रहा हो उस बाप के उपर पहचान होनी चहिए कि नहीं? (सभी ने कहा-होनी चाहिये।) तो मुख्य बात है पहचान। क्या? ऐसी पक्की पहचान जो दुनिया में कोई हमको डिगा न सके। पक्का निश्चय बुद्धि। जितनी गहरी पहचान होगी उतना जास्ती निश्चय बुद्धि होगा।

Student: There won't be bad traits in Baba's murli. Love for the murli means love for the Murlidhar.

Baba: What is meant by murli? (Student: Whatever Baba says, the shrimat.) *Arey*! How will you [recognize] the murli if you haven't recognized Baba himself? Should the murli printed on a paper be called the murli? (Student: Whether it is the paper murli, CD…) *Acchaa!* Is it ok even if it is a paper murli? (Someone said: That will still be called a third class murli.) So, if the BKs read that *third class* murli, if they develop love for the paper murli, then will it do? (Student: Love for the paper murli won't do.) So, the topic ends there. Love for the murli means love for the Murlidhar. And the murli should also be *first class*. What? It should not be the *third class* and *second class* [murli]. Which is the *first class* murli? [It is] the one which the Father narrates face to face, in practice, in a corporeal form when He comes. So, should you recognize the Father who is narrating [the murli] in a corporeal form or not? (Everyone said: We should.) So, the main topic is recognition.What? There should be such firm recognition that nobody in the world

[14] The one who narrates the murli

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

should be able to shake us. [We should have] a firm faithful intellect. The deeper the recognition you have, you will be the one with a faithful intellect to that extent.

तो मूल बात किस बात के ऊपर आयी? ज्ञान का फाउन्डेशन पक्का हो। जितना जिसका ज्ञान का फाउन्डेशन पक्का होगा, खुद समझने वाला होगा और दूसरों को भी समझाने वाला होगा। समझने वाले की निशानी क्या? वो दूसरों को जरुर समझायेगा। जो भी सामने आवेगा उसे कनविन्स करेगा। तो अगर बहुतों को कनविन्स करता है तो इससे साबित होता है खुद भी निश्चय बुद्धि है या नहीं है? है। तो विजयते की लिस्ट में आयेगा। माना ज्ञान का दर्पण बहुत पावरफुल होना चाहिए। और ज्ञान का दर्पण, जो मन बुद्धि है वो पावरफुल, निर्मल कैसे बनेगा? जितना अर्पणमय होंगे अर्पण माने क्या-2 अर्पण? तन भी पूरा अर्पण, ऐसे नहीं नाक दे दी, कान दे दिया, और अंगों को छुपा के रख लिया। तो पूरा अर्पणमय हुआ या नहीं हुआ? नहीं हुआ। पूरा ही अर्पणमय। तन भी पूरा अर्पण, धन भी पूरा अर्पण, ऐसे नहीं करोड़ों रुपया दे दिया और बैंक बैलेन्स में थोड़ा सा, खाने पीने के लिए थोड़ा तो रखें, अकाल पड़ने वाला है, महंगाई बढ़ने वाली है। तो सम्पूर्ण समर्पण कहेंगे? नहीं।

So, what is the main topic? The *foundation* of knowledge should be firm. The more someone's *foundation* of knowledge will be firm, if he himself understands [the knowledge] and explains it to the others; what is the indication of the one who understands? He will definitely explain it to the others. He will *convince* whoever comes in front of him. So, if he *convinces* many, then it proves that he himself has a faithful intellect or not? He has. Then, he will be included in the *list* of the victorious ones. It means that the mirror of knowledge should be very *powerful*. And how will the mirror of knowledge, the mind and intellect become *powerful*, pure? The more you are surrendered (*arpanmay*); what is meant by *arpan* (surrendering)? What is to be surrendered? The body should also be surrendered completely; it shouldn't be the case that you surrendered your nose, your ears and hid the other parts of the body. So, did you surrender yourself completely or not? You didn't. You should surrender [yourself] completely. The body as well as wealth should be surrendered completely. It shouldn't be like this that you give away millions of rupees and [kept] a little *bank balance* [thinking:] let me keep at least a little *bank balance* for eating and drinking; drought is going to start, prices are going to rise; so, will that be called surrendering [yourself] complete ? No.

तो जितना अर्पणमय, उतना दर्पण पावरफुल बनेगा। इसके लिये बेसिक में भी फिकरा बनाया हुआ है क्या? भूल गए? जहां हमारा तन होगा वहां हमारा मन होगा। तन की सेवा जहाँ कहीं लगायेंगे, कारखाने में लगायेंगे तो कारखाना ही याद आयेगा। कपड़े की दुकान में काम करेंगे तो रात में सोते-सोते भी कपड़े फाड़ेंगे। ये नियम है। जहाँ हमारा तन होगा वहां हमारा मन होगा। और जहां हमारा धन होगा सारी जिन्दगी की कमाई या बापदादे से मिला हुआ धन किसी करखाने में हमने झोंक दिया तो बुद्धि कहां जायेगी? कारखाने में ही जायेगी। भगवान की याद में बुद्धि नहीं जायेगी। अगर ईश्वरीय सेवा में लगावेंगे तो ईश्वरीय सेवा में जावेगी। ईश्वर याद आवेगा। ये नियम है जितना अर्पणमय उतना दर्पण पावरफुल बनेगा।

So, the more someone is surrendered, the more the mirror will become *powerful*. For this a proverb has been coined in the *basic* [knowledge] as well. What? Did you forget it? Our mind shall be wherever our body is. Wherever you invest the service of your body, if you invest it in a factory, then only the factory will come to the mind. If you work in a cloth shop, then you will tear clothes even while sleeping in the night. This is the rule. Our mind will be wherever our body is. And wherever we keep our wealth… the lifelong earnings or the wealth received from the father or grandfather in a factory, then what will the intellect think of? It will think of the factory itself. The intellect will not go towards God's remembrance, if we use it in God's service, then it will be busy in God's service. We will remember God. This is the rule. The more someone is surrender, the more the mirror will become *powerful*.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय: 01.02.45-01.06.02

बाबा:- तीसरा प्रश्न आया है कुश्या का अर्थ क्या है?

उत्तर:- आज एक शब्द आया है मुरली में कुश्या । क्या? कुश्या माना जिनको बहुत कोसा जाये। कोसना माने गालियाँ देना। इस दुनिया में सबसे जास्ती गाली कौन खाता है? शिवबाबा। तो जितना बड़ा कुश्या बनेगा उतना बड़ा प्राप्ति करने वाला भी बनेगा। क्या? अगर लोक लाज में दबा रहेगा। अरे, क्या लोग कहेंगे, भई हम नहीं, हम नहीं ऐसा करेंगे। तो लोक लाज में जो दबा रहने वाला है वो कुश्या की लिस्ट में आवेगा? नहीं आवेगा। तो प्राप्ति भी नहीं करेगा। लोक लाज बाहर की दुनिया की भी होती है लोक लाज ब्राह्मणों की दुनिया में भी होती है। ब्राह्मणों की दुनिया का जो लोक है, जो संसार है, जो ब्राह्मणों की दुनिया का संसार है, जो वर्तमान अभी ब्राह्मणों की दुनिया का संसार है, वो भस्म होने वाला है या रह जायेगा? वो भी भस्म होने वाला है। कितने बचेंगे? आठ ही बचेंगे। तो बुद्धि में आना चाहिए की आठ हमारी महिमा करेंगे या ग्लानी करेंगे? अगर हम ऐसा कर्म करें जो आठ के द्वारा हमारी महिमा हो जाये, तो हम नई दुनिया के मालिक बनेंगे।

Time: 01.02.45-01.06.02
Baba: Another question has been asked: What is meant by *kushyaa*?
Answer: Today a word has been mentioned in the murli: *kushyaa*. What? *Kushyaa* means the one who is cursed a lot. To curse means to abuse. Who faces the maximum insults in this world? Shivbaba. So, the bigger *kushyaa* someone becomes the greater attainments he will achieve. What? ☺ If he is suppressed under public honour (*lok-laaj*) [thinking:] *Arey*, what will the people say? I will not do this. So, will the one who remains suppressed under [the burden of] public honour be included in the *list* of *kushyaa*? He will not. So, he will not achieve attainments either. The public honour is related to the outside world as well as the Brahmin world. Is the world of Brahmins, is the present world of the Brahmins going to turn into ashes or will it survive? That is also going to turn into ashes. How many will survive? Only eight will survive. So, it should come to your intellect that will the eight praise you or will they defame you? If we perform such actions that the eight praise us, then we will become the master of the new world.

नहीं तो ये सारी पुरानी दुनिया जो ब्राह्मणों की देखने में आ रही है सब भस्म होने वाले हैं। भस्म होने वाली दुनिया की लोक लाज रखनी है या जो आने वाली 8 की नई दुनिया सामने खड़ी है, बुद्धि में भी आती है बात उसकी लोक लाज रखनी है? नई दुनिया की लोक लाज रखनी है भले छोटी दुनिया होगी। तो कुश्या बनना अच्छा है या बुरा है? जितनी ज्यादा कुश्या बनेंगे, जितना ज्यादा कोसेंगे लोग हमको गालियां देंगे, उतना हम कलंकीधर के बच्चे कलंकीधर डबल सिरताज बनेंगे। चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि लोग क्या कहेंगे। लोग तो सब, ये लोक ही भस्म हाने वाला है। भस्म होने वाले लोक की दुनियां में हम क्यों चिन्ता करें? जो दुनिया सामने खड़ी है उसकी लाक लाज का ध्यान रखें, वो ईश्वरीय दुनिया है। ईश्वरीय रचना है उसको महत्व दें।

Otherwise, this entire old world of Brahmins which is visible is going to be burnt to ashes. Should we care for the public honour (*lok-laaj*) of the world that is going to turn into ashes or should we care about the public honour of the forthcoming new world of eight that is in front of us, [about which] it comes in the intellect as well? We should care about the public honour of the new world, although it will be a small world. So, is it good to become *kushyaa* or is it bad? The bigger the *kushyaa* we become, the more the people insult us, the more we children of Kalankidhar (the one who bears accusations) will become kalankidhar, double crowned ones. We should not worry about what people will say. All these people, this world itself is going to be burnt to ashes. Why should we worry about the world that is going to be burnt to ashes? The world that is standing in front of us we should care for its public honour. That is God's world. That is God's creation. We should give importance it.

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info

समय: 01.06.31-01.08.55

बाबा:- अगला प्रश्न आया है- जो ज्ञान में चलते-चलते शरीर छोड़ देते हैं, मर जाते हैं, उनकी शूटिंग क्या होती है? ज्ञान में चलते-चलते शरीर छोड़ते हैं तो अज्ञानियों के घर में जन्म लेंगे या ज्ञानियों के घर में जन्म लेंगे? अज्ञानियों के यहाँ जन्म लेंगे। जब तक दुबारा जन्म लेकरके ज्ञान न लें तब तक प्रजा वर्ग में रहेंगे या राजाई परिवार की शूटिंग होगी? प्रजा वर्ग में चले जावेंगे। ये शूटिंग होती रहेगी।

Time: 01.06.31-01.08.55
Baba: Another question has been asked: What is the *shooting* of those who leave their body, die while following the knowledge? If someone leaves his body while following the path of knowledge, will he be born in the house of ignorant people or will he be born in the house of knowledgeable people? They will be born in the house of ignorant people. Until they are reborn and obtain the knowledge, will they be included in the subjects' category or will they perform the *shooting* of the royal family? They will go to the subjects' category. This *shooting* will continue.

एक तो हुआ हद का मरना, एक होता है... (किसी ने कहा- बेहद का मरना।) बेहद का मरना क्या होता है? अनिश्चय बुद्धि बन जाते हैं, ज्ञान छोड़ देते हैं। उनकी क्या शूटिंग होगी? (कोई ने कहा- चाण्डाल बनेंगे।) हाँ चाण्डाल भी प्रजा वर्ग है। चाण्डाल वो बनते हैं जो सरेण्डर हो जाते हैं और सरेण्डर हाने के बाद दुष्कर्म करते हैं श्रीमत के बरखिलाफ और ज्ञान से टूट पड़ते हैं, बाप में अनिश्चय बुद्धि हो जाते हैं और जो कुछ दिया है वो सब वापस कर लेते हैं। तन भी वापस, धन भी वापस, मन भी वापस, तो प्रजा तो बनते हैं लेकिन कौन सी प्रजा बनते हैं? चाण्डाल। फोर्थ क्लास प्रजा बनते हैं। शूटिंग उनकी भी होती है। क्या? चाहे हद की मौत मरें और चाहे बेहद की मौत मरें। इसलिए कोई भी मौत मरना अच्छा नहीं है चाहे 80 साल, 90 साल की बुढ़ढ़ा-बुढ़िया हो, एडवांस में चल रहा हो, तो भी क्या इच्छा करनी चाहिए? जिन्दा बने रहे, बाबा को याद करता रहे। ओम् शान्ति।

One thing is dying in the limited and the other is… (Someone said: Dying in the unlimited.) What is meant by dying in the unlimited? When someone becomes the one with a doubting intellect and leaves the knowledge, what *shooting* does he perform? (Someone said: They will become *caandaal*[15].) Yes, *chaandaal* are also included in the subjects' category. Those who *surrender* and perform wicked actions against the shrimat and break away from the knowledge , have a doubting intellect towards the Father and take back whatever they have given, they take back the body, the wealth as well as the mind, so they do become *prajaa* (subjects), but what kind of *prajaa* do they become? *Caandaal*. They become *fourth class prajaa*. Their *shooting* also takes place. What? Whether they die a limited death or an unlimited death. This is why it is not good to die in any manner. Even if someone is an aged person of 80, 90 years, and is following the *advance* knowledge, what should he desire? He should remain alive and keep remembering Baba. Om Shanti.

[15] Those who cremate corpses

Email id: a1spiritual1@gmail.com
Website: www.pbks.info